P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-11* July- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

अवधी फाग साहित्य में 'धमार' का सांगीतिक स्वरूप

शालिनी गुप्ता
शोध छात्रा,
संगीत विभाग,
चौधरी चरण सिंह वि.वि.,
मेरठ

सारांश

अवधी फाग साहित्य की परम्परा का कोई निश्चित प्रामाणिक तथ्य उपलब्ध नहीं। फाग शब्द का सम्बन्ध फागुन में गाये जाने वाले विशेष ऋतुगीत से है, जिसे अवध लोकान्चल में 'फगुआ' के नाम से जाना जाता है।

मुख्य शब्द : अवधी फाग साहित्य, सांगीतिक स्वरूप।

प्रस्तावना

फाग के कई रूप हैं जैसे – होली, फाग राग, डेढ़ताल, उलारा, कबीरा–जोगीरा, झूमर एवं धमार इत्यादि। सबको गाने का अपना अलग अलग तरीका है। फाग की धमार विद्या को शास्त्रीय संगीत में भी गाया जाता है पर यहॉ पर ''धमार'' की लोक संगीत में प्रयुक्त विद्या का सांगीतिक व साहित्यिक विवरण दिया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कैसे लोक संगीत की फाग में गाये जाने वाले धमार, शास्त्रीय संगीत में गाये जाने वाले धमारों से भिन्न है। और इस विद्या का क्या अस्तित्व है।

अवधी फाग साहित्य में 'धमार' का सांगीतिक स्वरूप

फाग शब्द का सम्बन्ध फागुन में गाये जाने वाले विशेष ऋतुगीत से है, जिसे अवध लोकान्चल में ''फगुआ'' के नाम से जाना जाता है।

फागुन के महीने में पछुआ हवा के जो झकोरे चलते हैं उसे ''दिन फगुवाये हैं'' ऐसा कहा जाता है। इस हवा का शरीर से स्पर्श होने पर हमारी श्रृंगारिक भावना मुखर हो उठती है। ऐसे ही समय में आता है – होली का पर्व, जो मुक्ति और आमोद–प्रमोद का पर्व है – सामाजिक बंधनों से मुक्ति, रूढ़ियों से मुक्ति, अनेकानेक वर्जनाओं से मुक्ति। इन विभिन्न उल्लासपूर्ण भावों को जन मानस फागों द्वारा अभिव्यक्त करता दिखाई देता है। फागों की परिभाषा के सन्दर्भ में हम कह सकते है कि :–

''फाग वे लोकगीत है, जो बसंतोत्सव, रंगोत्सव, होलिकोत्सव, अथवा फागोत्सव के अवसर पर गाये जाते हैं।''[1]

अध्ययन का उद्देश्य

अवधी फाग साहित्य में गाये जाने वाली 'धमार' विद्या का परिचय व उसका सांगीतिक स्वरूप विश्लेषित करना।

उद्भव, परम्परा एवं विकास

लोकगीत के रूप में फाग की मौखिक परम्परा दसवीं शताब्दी से चली जो कि बारहवीं शताब्दी तक लिखित परम्परा के रूप में प्रचलन में आई। विषयवार फागों, प्रश्नोत्तरी, फागों, तथा विभिन्न शैलियों की फागों का प्रचलन हुआ। फाग साहित्य की लोकप्रियता एवं उसके विकास में फड़बाजी की प्रमुख भूमिका है। काव्य क्षेत्र में जिसका प्रचलन एक विषय की रचना और समस्यापूर्ति के साथ हुआ।

अवधी फाग साहित्य की परम्परा के प्रारम्भ का कोई निश्चित प्रामाणिक तथ्य उपलब्ध नहीं। यद्यपि अवध क्षेत्र में गाये जाने वाले फाग प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं किन्तु फाग गीतों के कुछ रचनाकार ज्ञात हैं, तो कुछ अज्ञात। ज्ञात कवियों ने अपनी रचनाओं का समय नहीं दिया। हो सकता है, लोक साहित्य की मौखिक परम्परा के अन्तर्गत ये गीत शताब्दियों से मौखिक रूप से कण्ठबद्ध किये गये हों, जब संकलन की आवश्यकता पड़ी, तब ये गीत लिखित रूप में आये होंगे, किन्तु जब ये लोकगीत लिपिबद्ध हुए तब भी उस समय का प्राप्त पुस्तकों में उल्लेख नहीं मिलता। कुछ प्रकाशकों, लेखकों और संग्रहकर्ताओं के नाम अवश्य मिल जाते हैं।

फाग साहित्य का स्वरूप

छन्द शैली के आधार पर फागों के कई रूप है, जैसे –

होरी

यह होली का बिगड़ा रूप है। इन गीतों को स्त्री प्रधानगीत कह सकते हैं, क्योंकि इनका गायन स्त्रियां ही करती हैं। एक स्त्री गीत की कडी प्रारम्भ करती है। अन्य उसका अनुकरण करती हैं। ये गीत श्रृंगारिक भक्तिपरक तथा सांस्कृतिक भावना से ओत–प्रोत होते हैं।

होली गीत का एक उदाहरण है –

होरी खेले रघुवीरा, अवध मा होरी खेले रघुवीरा।
हिलमिल आवै लोग लुगाई, भई महलन मा भीरा,
अवध मा.....

फाग राग

फाग राग का शुभारंभ बसंत पंचमी के दिन से होता है। फागुन में जो लोकगीत गायकों द्वारा गाया जाता है, उसे ही फाग या होली कह कर पुकारा जाता है। फागुन में जो लोकगीत गाये जाते हैं उनके नाम हैं–फाग होली, धमार, चारताल, डेढ़ताल, धमार तथा झूमर उलारा आदि। प्रस्तुत है फागुन गीत। वियोगिनी की व्यथा तो फाग गीतों में साकार हो उठी है। फागुन आ गया पर प्रिय नहीं आए। ऐसे निष्ठुर को क्या कहा जाय–

''आइ गये फागुनवा न आये कन्हाई,
ऐसे बेदर्दी से कइने निभाई।
फागुन मास अबीर उ़ड़त हइ,
द्वारे ठाड़ि हम अंचरा बिछाई।
दइ गये तेल हरपवन सेन्हुर,
अँखिया कई कजरा, उइ महल उठाई।
कातन कॉ दइ गये चनन चरखवा,
लहुरी ननदिया से मनवा लगाई।''[2]

डेढ़ ताल

चौताल डेढ़ ताल और ढाई ताल एक ही शैली के फाग हैं। किन्तु इनके आकार क्रमशः विस्तृत होते जाते हैं। डेढ़ ताल की मुख्य पंक्ति (कड़ी) तीन बार यति लेने से पूरी होती है।

डेढ़ताल प्रायः चांचर व कहरवा में निबद्ध गाया जाता है जिसमें चांचर ताल से जीत को प्रारम्भ कर, कहरवा में गीत को द्रुत लय में गाते हैं, वापिस मध्यलय की चांचर ताल में आकर गीत को समाप्त करते है।

उदाहरण –दसरथ सुत खेलत होरी
अवधपुर बटोरी (चांचर)
सोर भयो चँहु ओर अवधपुर
रघुवर खेलत होरी (कहरवा)
सोरह सौ रनिवास जनकपुर
सब धाय परे एक ओरी (चांचर)
अवधपुर बटेरी

उलारा

धमार, चौताल, डेढ़ताल और ढाई ताल के गीतों के गायन में लगभग आधे घण्टे का समय लगता है। गीत समाप्त होने के पश्चात् और प्रारम्भ होने के पूर्व का जो अन्तराल होता है, उसमें रस परिवर्तन की दृष्टि से इस गीत को गाया जाता है। इसका आकार लघु किन्तु चुटीला होता है।

यह गीत प्रायः कहरवा ताल में गाया जाता है इस गीत की लय अत्यन्त द्रुत होती है जो कि उल्लास के चरम को दर्शाती है।

उलारा का एक उदाहरण यहॉ प्रस्तुत है –

, ''सदा आनन्द रहे यही द्वारे मोहना।
मोहन खेलैं फाग लाल मन मोहना।।
छवैं महीना के हमरे कन्हैंया मोहना।
चलैं बकइयाँ–बकइयाँ लाल मन मोहना।।

कबीरा जोगीरा

कुछ लोग जोगीरा, स रा, र र र ''भैया सुनि लेव मोर कबीर'' और कबीरा अ रा र र र '' गाते हुए टोलियों में घूमते हैं, नाथ पंथी साधुओं के प्रश्नों को जोगीरा, और कबीर पंथी निगुर्णियों के उत्तर को कबीरा कहते हैं। काल प्रवाह में जोगीरा, और कबीरा, लोक जीवन के अभिन्न अंग बन गये, और इन्हें एक विशेष लय भी दी गयी। यद्यपि इसमें अश्लील भावों एवं फूहड़ शब्दावलियों का समावेश हो गया है। फिर भी इसमें लोक जीवन का मधुरस प्रवाहित है।''[3]

इसका एक उदाहरण है –

होरी के हुरदंग मा भइया करो न केहू झगरा
चाहटा लेके भउजी दौड़ी, भूल गवा सब रगरा
कबीरा सा रा रा रा रा

झूमर

यह गीत होली के अवसर पर गाया जाता है। इसमें राधा कृष्ण या सीता राम के होली खेलने का वर्णन मिलता है। झूमर का एक ही प्रकार मिलता है। इसमें अधिक विविधता नहीं हैं। अतः स्वर रचना में भी सीमित है। ''झूमर'' गीत कहरवा ताल में सामूहिक रूप से या अकेले गाते हैं।

धमार

जहॉ होरी स्त्री प्रधान गीत है, वहीं धमार पुरूष प्रधान गीत है। यहॉ पर उल्लेखनीय यह है कि इस धमार गीत का शास्त्रीय संगीत धमार गायन से कोई साम्य नहीं है। शास्त्रीय धमार की जो शैलीगत विशेषता है वो इस गीत में नहीं पायी जाती है।

जहाँ शास्त्रीय धमार गायन शैली में 14 मात्रा की 'धमार ताल' का प्रयोग होता है, वहीं लोक जगत के इन धमार गीतों में बहुधा 'कहरवा ताल' का प्रयोग होता है। कहीं–कहीं पर इन लोक धमार गीतों में भी दीपचन्दी ताल (जो कि 14 मात्रा की होती है) का प्रयोग होता है। अतः 14 मात्रा की ताल का प्रयोग होने पर भी हम देखते हैं कि ताल के खण्ड विभाजन की दृष्टि से शास्त्रीय धमार ताल से इसका स्वरूप बिल्कुल अलग होता है। शास्त्रीय धमार ताल में जहाँ खण्ड विभाजन 5, 2, 3, 4 का है वहीं दीपचन्दी का ताल खण्ड विभाजन 3, 4, 3, 4 का है। हम देखते हैं कि दीपचन्दी में 14 मात्रा होने के बाद भी विषम–सम, विषम–सम का सामन्जस्य है जबकि शास्त्रीय धमार ताल में यह देखने को नहीं मिलता।

अवधी लोकगीतों में धमार गीतों का विशेष स्थान है। इसमें वाक्यों की संख्या अधिक होती है ढोल, ढोलक, मंजीरा, झांझ, झींकर, चिकारा इत्यादि अनेक यंत्र इस उल्लास भरे गीत के साथ बजाये जाते हैं।

धमार का एक उदाहरण यहॉ प्रस्तुत है जिसकी स्वरलिपि बनाकर उसका सांगीतिक विश्लेषण भी किया गया है।

धमार (अवधी)

ताल – कहरवा

आयो रे रितुराज आज ये होरी खेलन आयो

- बन बन बाग बाग गलियन में
  मधुर सुंगध उड़ायो
  हरियर पात पिछौरी ऊपर
  अमित रंग ढरकायो।
- मधुर सुरन या कोयल बोले
  पन्छी फगुना गायो
  उड़त गुलाल लाल भये बादल
  केसर कीच मचायो।
- बाजत बीन मृदंग झांझ ढफ
  मंजीरा टनकायो
  गावत फाग औ ढोल बजावत
  अति आनन्द मनायो।

स्थाई

– प़ नि़ नि़ ऽ आ ऽ यो	नि़ – नि़ सा रे ऽ रि तु	सा रे रे रे रा ऽ ज आ	– मरे नि सा ऽ जऽ ये ऽ
रे व म व हो ऽ री ऽ	म रे सा रे खे ऽ ल न	नि़– सा – आ ऽ यो ऽ	– – – – ऽ ऽ ऽ ऽ
X	0	X	0

अन्तरा

रे रे रे रे ब न ब न	म – म म बा ऽ ग बा	प प व नि ऽ ग ग लि	ध ध प – य न में ऽ
रे प प म म धु र सु	रे सा सा रे गं ऽ ध उ	नि़ – सा – डा ऽ यो ऽ	– – – – ऽ ऽ ऽ ऽ
नि नि नि नि ह रि य र	नि – नि नि पा ऽ त पि	ध – ध नि छौ ऽ री ऽ	ध प प प ऊ ऽ प र
रे प प म अ मि त रं	रे सा सा रे ऽ ग ढ र	नि़ – सा – का ऽ यो ऽ	– – – – ऽ ऽ ऽ ऽ
X	0	X	0

उपरोक्त गीत कहरवा ताल में निबद्व है। गीत की स्थाई की स्वर संरचना में राग वृन्दावनी सांरग के स्वरों का प्रयोग दिखाई पड़ता है। परन्तु अन्तरें में राग वृन्दावनी सांरग के अवरोह में शुद्ध धैवत का प्रयोग ''हरियर पात पिछौरी ऊपर'' पंक्ति में किया गया है। शुद्ध धैवत का यह प्रयोग इसे राग सामन्त सांरग के रूप में बदल देता है। राग वृन्दावनी सारंग के अवरोह में अल्प शुद्ध धैवत का प्रयोग होने से ही राग सामन्त सांरग का अवतरण होता है। अतः उपरोक्त सांगीतिक रचना को राग सामन्त सांरग में कहना उचित होगा।

निष्कर्ष

इस प्रकार से हम ऐसे तो अवध का फाग साहित्य बहुत ही समृद्ध है और 'धमार' का भी उसमें एक अलग स्थान है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

डा0 रामबहादुर मिश्र, पृष्ठ नं. 4 ''अवध मा होरी खेले रघुवीरा''

डा0 रश्मि दीक्षित, पृष्ठ नं. 125 ''संगीत एवं काव्य की दृष्टि से अवधी लोकगीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

अंत टिप्पणी

1. *डा0 राज बहादुर मिश्र, पृष्ठ नं.–4, ''अवध मा होली खेले रघुवीरा''*
2. *डा0 रश्मि दीक्षित, पृष्ठ नं.–125 संगीत एवं काव्य की दृष्टि से अवधी लोकगीतों का विश्लेषनात्मक अध्ययन*
3. *डा0 रामबहादुर मिश्र, पृष्ठ नं. 7, अवध मा होरी खेले रघुवीरा।*